Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities, Vol 1 pp. 55-61 , 2006 DOI: 10.51220/hjssh.v1i1.10

# गढ़वाल में नाथ पंथ का विकास

**मंजुला जुगरान**
**इतिहास विभाग, हे.न.ब. गढ़वाल वि.वि. परिसर, पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखण्ड)**

गढ़वाल हिमालयी क्षेत्र में प्राचीन काल से ही देव शक्तियो का निवास रहा हैं। आदि मानव ने सर्वप्रथम इसी भूखण्ड में अपने क्रमिक विकास की यात्रा प्रारम्भ की। फलतः आर्य भाषाओं का क्रमिक विकास भी इसी धरा पर हुआ। अनादि काल में जब सम्पूर्ण विश्व अशिक्षा व अज्ञानता के अंधकार मे जी रहा था उस समय देवभूमि केदारखण्ड की गुफाओं में मनन चिन्तन व स्वाध्याय करने वालों से यह भूखण्ड ज्ञानार्जन की दिशा में उन्नतशील था। यहाँ सुस्वाद व मृदुजल, फल तथा दृश्यावलोकन के लिए नैसर्गिक प्राकृतिक सुषमा का अथाह भंडार था। इसलिए इस प्रदेश में कई मनीषियों, ऋषियों, तपस्वियों, ज्ञानियों, सिद्धों व नाथों ने अपने साधना स्थल बनाये जो आश्रमों के रूप में विकसित हुये और कालान्तर में शिक्षा के महत्त्वपूर्ण केन्द्र बन गये तथा देश के विभिन्न भागों से आये ज्ञानाभिलाषियों को अपने ज्ञान विज्ञान से अवगत कराते रहे। रामायण व महाभारत में जिन आश्रमों (शिक्षण संस्थानों) का उल्लेख है उनमे से अधिकांश गढ़वाल हिमालय में अवस्थित थे जिनमें वेद वेदांग, अस्त्र शस्त्रों व योग की शिक्षा दी जाती थी। महाभारत (वनपर्व 39/54) से पता चलता है कि बदरिकाश्रम के समीप कई सिद्ध मुनियों के आश्रम थे। वैदिक आचार्य भारद्वाज का आश्रम हरिद्वार में था[1]। वेद व्यास ने महाभारत की रचना तथा अष्टादश पुराणों का संकलन बदरिकाश्रम के समीप व्यास गुफा में किया था[2]।

कण्वऋषि का आश्रम कोटद्वार के समीप कण्वाश्रम नाम से जाना जाता है[3]। दुगड्डा के समीप चरक ऋषि का मंदिर, टिहरी गढ़वाल की हिमदाव पट्टी में वशिष्ठ गुफा, ऋषिकेश के पास गूलर नामक स्थान में भी वशिष्ठ गुफा, उत्तरकाशी में परशुराम का मंदिर, उत्तरकाशी के समीप जड़भरत का मंदिर, गोपश्वर के समीप अत्रि मुनि का आश्रम तथा दत्तात्रेय का मंदिर, पौडी की सितोनस्यूं पट्टी में बाल्मीकि आश्रम, श्रीनगर में शुक्राता नामक स्थान का सम्बन्ध शुक्राचार्य से होना तथा पाराशर ऋषि का आश्रम इसी क्षेत्र में होना[4], सिद्ध करता है कि यहाँ पर शिक्षा दान होता और इन शिक्षण संस्थानों से कई सिद्ध व योगी, नाथ उत्पन्न होते थे।

विद्वानों ने वैदिक साहित्य, बौद्ध तथा जैन साहित्य में विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त नाथ शब्द को स्वामित्व जैसे अभिप्राय का सूचक माना है।[5] कोष ग्रन्थों (वृहद् हिन्दी कोष पृ0 518) में नाथ का अर्थ प्रभु, अधोश्वर, स्वामी, पति, बैल के नाक में पहनायी जाने वाली रस्सी तथा गोरखपंथी साधुओं की उपाधि के रूप में दिया गया है। अथर्ववेद व तैत्तरीय ब्राह्मण में नाथ शब्द का प्रयोग रक्षक के अर्थ में मिलता है। महाभारत में स्वामी या पति के अर्थ में इसका प्रयोग हुआ है। बौद्धों, जैनों व वैष्णवों

©SHARAD

में इस शब्द का प्रयोग सबसे बड़े देवता के अर्थ में पाया जाता है। परवर्ती काल में योग परक पाशुपत शैव मत का विकास नाथ सम्प्रदाय के रूप में हुआ और यह शब्द शिव के अर्थ में प्रयुक्त हो गया। शंकराचार्य ने नाथ शब्द का प्रयोग ईश्वर के पर्याय के रूप में अपने विभिन्न स्तोत्रो में किया है। बाद में शैव सम्प्रदाय का नाथ शब्द अपनी विशेषताओं के कारणं वैष्णव सम्प्रदायों द्वारा भी अपना लिया गया। विष्णु पुराण के सहस्त्र नामों में से एक नाम भागवतकार ने 'हे नाथ नारायण वासुदेव हरे' कह कर उसकी व्यापकता स्वीकार की है। गोरक्ष सिद्धान्त संग्रह में नाथ शब्द में 'ना' का अर्थ अनादि रूप और 'थ' का अर्थ स्थापित होना कहा गया है।[7] इस प्रकार नाथ मत वह अनादि धर्म है जो भुवनत्रय की स्थिति का कारण हैं। गोरखवानी[8] में भी नाथ शब्द का प्रयोग परमतत्व के रूप में हुआ है। निर्गुणी संतों में से रामानन्द के नाम से प्रसिद्ध रामाक्षा रचना में नाथ को प्राण पिण्ड की रक्षा करने वाला कबीर के ग्रन्थों में नाथ त्रिभुवन को यति कहा जाता है, जिन्हें अति मानवत्व अथवा देवत्व दिया गया।

इस विवेचन से स्पष्ट है कि नाथ शब्द के दो अर्थ हैं एक परम तत्व या ब्रह्म तथा दूसरा गुरु। नाथ सम्प्रदाय उन साधकों का सम्प्रदाय था जो नाथ को परम तत्व स्वीकार कर उसकी प्राप्ति के लिये योग साधना करते थे तथा दीक्षा के बाद नामान्त में नाथ उपाधि जोड़ते थे। नाथों का मत नाथ पंथ तथा उसके अनुयायी नाथ पंथी कहलाते है। नाथ मत को सिद्ध मत, सिद्ध मार्ग, योग मार्ग, अवधूत मत भी कहा जाता है। कुछ विद्वानों का मत है कि प्रतीक रूप से शिव के डमरू सें सृष्टि के वाह्यनाद की उत्पत्ति मानी जाती है जिसे नाथ पंथ कहा जाता है। हिन्दी साहित्य कोष में लिखा है कि मत्स्येन्द्रनाथ के शिष्य गोरखनाथ इस मत के सबसे बड़े पुरूषकर्ता थे। उन्हीं के द्वारा परिवर्तित कहा जाने वाला बारह पंथी मार्ग नाथ संप्रदाय के नाम प्रसिद्ध हुआ।

गढ़वाल में नाथ पंथ को प्रचारित व प्रसारित करने का श्रेय गुरू गोरख नाथ को दिया जा सकता है। जिनका समय राहुल ने 1175 ई0 से पूर्व व अन्य विद्वानों[9] ने भी 800 से 1191 ई0 के बीच स्वीकारा है। डॉ0 डबराल[10] ने भी 11 वीं सदी ई0 में गोरख नाथ का प्रादुर्भाव माना है। ऐसी स्थिति में गोरख का समय 11 वीं सदी ई0 मानकर इसी समय से गढ़वाल में नाथ पंथ का बोलबाला होना स्वीकारा जा सकता है। गोरख नाथ का ऐसा शक्तिशाली व्यक्तित्व था जो नाथ पंथ को बौद्धतंत्र की प्रधानता से अलग कर उसें शुद्ध शैव भूमि में लाया। नाथ पंथ शैव सम्प्रदाय का साधना पंथ था। विद्वानों[11] ने भी नाथ सम्प्रदाय पर बौद्ध तथा शैव धर्म का प्रभाव लक्षित किया है। 10 वीं 11 वीं सदी में कापालिक, लकुलीश, कालमुख आदि अपनी स्वतंत्र सत्ता खोकर नाथपंथियों में रूपान्तरिक हो गये। इसी कारण विद्वानों ने तंत्र तथा पाशुपत मत की मिश्रित परम्परा नाथपंथियों में बतलायी है।[12] भैरवावली पाण्डुलिपि में मत्स्येन्द्रनाथ को लकुटधारी वीर मसाण कहा गया है। ये शिवोपासक थे। उत्तरी भारत 750 से 1000 ई0 तक शैव धर्म से घिरा था। शक्तिशाली राज्य स्थापित करने वाले राजपूत शिवोपासक थे। गढ़वाल के कत्यूरी शासकों के लेखों में ललितसूरदेव, पद्मटदेव, सुभिक्षराजदेव को शैव बतलाया गया

है[13]। 12 वीं सदीं में बंगाल के बौद्ध राजा बल्लाल ने जोशीमठ के सिंहगिरी नामक एक शैव सन्यासी से शैव धर्म की दीक्षा ली।[14] राजपूत शासकों के शैव होने के कारण नाथ मत को गढ़वाल में फैलने का सर्वाधिक अवसर मिला।

8 वीं - 9 वीं सदी में नाथ सिद्धों का प्रचार भारत के अनेक भागों में फैल गया, बाद मे गोरखनाथ ने त्याग, तपस्या व योग के प्रचार द्वारा इसमें सुधार कर इसे जनमानस में श्रद्धापूर्ण स्थान दिलाया। नाथ सिद्धों के ग्रन्थों में तीर्थयात्रा का वर्णन है। इन नाथों ने बदरी केदार क्षेत्र की कई बार यात्रा की। बदरिकाश्रम में नर नारायण जो नाथ कहलाते थे, रहते थे।[15] मत्स्येन्द्रनाथ, गोरखनाथ, ज्वालेन्द्रनाथ, कारिणायानाथ, माणिकनाथ आदि योगी बदरिकाश्रग में तपस्या हेतु आये थे। अतः स्पष्ट है कि यहां प्राचीन काल से ही नाथ मंत का प्रचार प्रारम्भ हो गया था। केदारखण्ड (42/52-53) में गौरी तीर्थ के दक्षिण की ओर गोरक्ष का आश्रम बतलाया गया है। इस स्थान पर निवास और तप करने से गोरखनाथ की भांति उत्तम सिद्ध हो जाने का उल्लेख भी केदारखण्ड ग्रन्थ (42/52-53) में हुआ है। राहुल[16] ने गोरक्ष आश्रम को त्रिजुगीनारायण बतलाया है। डवराल[17] ने भी त्रिजुगीनारायण और केदारनाथ मार्ग के पास गौरीकुण्ड के समीप आश्रम बतलाया है। बड़थ्वाल[18] का मत है कि मध्य युग में सबसे बड़े महात्मा गोरखनाथ ने दक्षिण गढ़वाल के दुगड्डा नगर के समीप अत्यन्त निर्जन व बीहड़ स्थान धौल्या उड्यारी (धवल गुफा) नामक गुफा में घोर तपस्या कर अलौकिक सिद्धि प्राप्त की। अतः स्पष्ट है कि गोरखनाथ का सिद्धि क्षेत्र गढ़वाल में ही था। निरंकार के जागर में सृष्टि का आदिकर्ता गोसाई को माना गया है, जिसके लिये बूढ़ाकेदार शब्द का भी प्रयोग हुआ है। बूढ़ाकेदार व गोसांई शब्द का प्रयोग नाथों के लिये किया गया है। टिहरी जिले में बूढ़ाकेदार भी इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण स्थान है और नाथों से प्रभावित क्षेत्र सिद्ध होता है। सिद्ध चौरंगीनाथ का समय सन् 905 ई0 माना गया है[19]। और इनका आश्रम गढ़वाल में ही बताया गया है। उत्तरकाशी जिले के गाजणागढ़ से सम्बन्धित पांच गांवों (मेटियारा, लोदाणा, सौड, दिखोली, चौंडियाड) में प्रति तीसरे वर्ष चौरंगीनाथ का एक अदभुत मेला अब भी लगता है। पर्वत शिखर पर चौरंगीखाल है जहां पर चौरंगीनाथ का मंदिर है। यहां पर चौरंगी के नाम से श्रीफल फाड़ कर प्रसाद बांटा जाता है। चौडियाड़ गांव में चौरंगी का प्राचीन आश्रम है जहां विशाल त्रिशूल चिमटा तथा चौरंगी की चांदी की मूर्ति है।

नाथपंथ के बारह पंथो में से एक सत्यनाथी पंथ भी है जो कि ब्रह्मा के अवतार सत्यनाथ द्वारा चलाया गया था। इन्हें श्रीशैल सिद्धपीठ का निवासी बतलाया गया है। यह श्रीशैल कुछ विद्वानों नें महाराष्ट्र का श्रीशैल तथा कुछ ने नागार्जुनी कोण्डा जिला गुन्टूर का श्रीशैल माना है। चंदोला[20] ने गढ़वाल श्रीनगर के पास देवलगढ़ के बामपार्श्व में श्रीशैल माना है। देवलगढ़ में चट्टानों के अन्दर बनी प्राचीन गुफायें हैं। यह सारा पर्वत प्राचीन काल से श्री नाम से ख्याता था।[21] इसके बायें पार्श्व में बसा गांव आज भी सिरमढ़ी (सुमाड़ी) नाम से प्रसिद्ध है[22], अतः यही क्षेत्र सत्यनाथ का निवास स्थान माना जा सकता

है। पं0 हरिकृष्ण रतूड़ी के अनुसार अजयपाल ने सत्यनाथ में मंदिर की स्थापना देवलगढ़ में विक्रमाब्द 1512 के आस-पास की। 18 वीं सदी के गढ़वाल के चित्रकार एवं कवि मौलाराम तोमर कृत गढ़राजवंश काव्य से पता चलता है कि गढ़वाल के राजाओं का सत्यनाथ से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। अत: सत्यनाथ काफी प्राचीन प्रतीत होते हैं। इनका प्रभाव गढ़वाल और कुमाऊं के प्रदेश पर अधिक रहा है। क्योंकि आज भी यहां के नाथ योगी सत्यनाथी पंथ के है। मध्यकालीन नाथ सिद्ध धर्म भावना से गढ़वाल अत्यधिक प्रभावित हुआ। इनका प्रभाव गढ़वाल के तंत्र मंत्र गीता में लक्षित होता है। राजा मानसिंह की नाथ तीर्थावली में देवलगढ़ को प्राचीनकाल से ही नाथों का तीर्थराज कहा गया होगा। ये प्रमाण स्पष्ट करतें हैं कि सत्यनाथ की कर्मभूमि यही प्रदेश रहा होगा। देवलगढ़ स्थान सत्यनाथ योगियों का प्रमुख केन्द्र था। यहाँ सत्यनाथ गद्दी, गणेश भैरव तथा अनेक पीरों की समाधियां है। देवलगढ़ के पूर्व में नवासू गांव में भी सत्यनाथ का प्राचीन मंदिर है। नाथों की वाणियों के संग्रह में गढ़वाल के राजा अजयपाल की वाणी भी मिलती है[23]। इसका नाथों से घनिष्ठ सम्बन्ध होने के कारण ही इसे नाथों में स्थान मिला। अत: अजयपाल ने गढ़वाल में नाथपंथ का प्रचार कर इसे जीवित रखा।

प्राचीन काल से ही हरिद्वार व ऋषिकेश की नगरियों में नाथ सम्प्रदाय का बोलबाला रहा। हरिद्वार में गोरक्षनाथ का मंदिर तथा योगियों के प्रसिद्ध अखाड़े हैं। यह नाथों का उत्तर भारत का सबसे बड़ा पंचायती केन्द्र है। यहां प्रमुख नाथ गद्दियों का उल्लेख चंदोला[24] ने किया है, जैसे दरगाह, कोहाट, भीमगोड़ा, बाड़ा, ऋषिकेश में शीतलनाथ की समाधि आदि। प्राचीन श्रीनगर में गोरखनाथ गुफा तथा मंदिर था। भक्त्याणा में गोरखनाथ की गुफा में मंदिर के अन्दर मृखलिंग तथा मंदिर के बाहर भैरव का स्थान नाथों द्वारा शिवोपासना की पुष्टि करता है। गढ़वाल में गोरखनाथ तो शिव रूप में पूजित है[25]। यहां नाथों की गद्दियों में नाथबाड़ा का उल्लेख हुआ है[26]। नये श्रीनगर में एक मोहल्ला नाथों को ही दिया है जिसे जोगीवाड़ा कहते हैं। यह नाथों का पूज्य स्थान है। यहाँ का निरंजनी बाड़ा नामक मुहल्ला भी नाथ सम्प्रदाय का केन्द्र रहा होगा। श्रीनगर से चार कि0 मी0 दक्षिण की ओर ऋषिकेश यात्रा मार्ग पर बींगाधारा नामक स्थान पर भी गुरुगोरखनाथ की गुफा में काले पत्थर की पद्मासन मुद्रा मे विराजमान गोरखनाथ की मूर्ति है। प्राचीन काल से ही नाथपंथियों का योगपीठ होने के कारण योग शिक्षा लेने के लिए लोग यहां आते तथा कान छिद्वाते रहे है। यहां पर आज भी सोलह सामाधियां नाथ योगियों की पुण्य स्मृति की स्मारक हैं।

लैन्सडाउन में गढ़वाल गुमखाल-द्वारीखाल मार्ग में स्थित भैरवगढ़ी भी नाथयोगियों का केन्द्र रहा है। गढ़वाल में श्रीनगर में कमलेशवर, चमोली में गोपेश्वर, टिहरी में बूढ़ाकेदार, उत्तरकाशी में विश्वनाथ मंदिर पर नाथों का अधिकार आज तक है, लेकिन प्राचीन काल में इनका अधिकार सभी मंदिरों पर था, क्योंकि कमलेश्वर, सिमली तथा तपोवन के मंदिरों तथा के शिखर के नीचे कुण्डलधारी आदिनाथ की मूर्तियां मिली हैं। इन्हीं के अनुकरण पर गढ़वाल में बाद के बनें मंदिरों के शिखर के नीचे

कुण्डलधारी आदिनाथ की मूर्ति मिलती है। बदरिकाश्रम भी नाथों के अधिकार में आ जाने पर बदरीनाथ बन गया। नरसिंह नामक योगी का ज्योतिर्मठ पर अधिकार कर लेना (केदारखण्ड 62/38-40) नाथों के प्रभाव को लक्षित करता है। यही कारण है कि बदरीनाथ मंदिर के अधीन समस्त मंदिर, केदारनाथ मंदिर के तीर्थ, अगस्त्यमुनि, उखीमठ, कालीमठ, गुप्तकाशी, गोपश्वर, तुंगनाथ मद्महेश्वर, रूद्रनाथ, दक्षिणी गढ़वाल में महाबगढ़, भैरवगढ़, मुण्डणेश्वर, एकेश्वर, तडासर, देवलगढ़ में सत्यनाथ की गद्दी, नवासू में सत्यनाथ मंदिर मोलठी, कमेड़ा, जोगीबाड़ा के प्रमुख भैरव मंदिर तथा नागनाथ पीठ आदि नाथों के अधिकार में थे। नाथ पंथ के प्रचार व प्रसार में कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण स्थान अतीतकाल से ही सहायक रहे है। जैसे केदारनाथ, नरेन्द्रनगर के पास कुजांपुरी[27] खैरागढ़, गोस्थल (गोथल मल्ला नागपुर)[28] गो स्थल (गोपेश्वर), गोलक्ष (गोलक्ष पर्वत श्रीनगर के दक्षिण पूर्वी उपत्यका का प्रदेश)[29], चांदपुर चाका (चाकाक्वली टिहरी) छाम (टिहरी) जुशीमठ, (जोशीमठ) तुमड़ीघाट (चंड़घाट हरिद्वार), तमोटियाघाट (मातढ़ौन गढ़वाल कुमाऊ के मध्य स्थित, तप्तकुण्ड (तप्तकुण्ड बद्रीनाथ), देवप्रयागी (देवप्रयाग), दूयादेश (देहरादून), धौल्या उडियार (दक्षिण गढ़वाल), नजीमंडी (नजीबाबाद), नागनाथ नागपुरी (वर्तमान नागपुर), नीलकंठ, पातली का मैदान (कालागढ़ के उत्तर में पातलीदून), भरतरि का चौका (वर्तमान नैथाणा गांव मनियारस्यूं पट्टी), सतेड़ि का चौंतरा (उदयपुर वल्ला गढ़वाल), सबालाक पर्वत (शिवालिक), भोटंत, हरड़ा की दौड़ (उत्तरकाशी में फतेह पर्वत के समीप का भाग)[30] आदि। इन तथ्यों से स्पष्ट है कि गढ़वाल प्राचीन काल से ही नाथों की कर्मस्थली रही है।

विभिन्न नाथ योगियों का गढ़वाल से सम्बन्ध होने से आज गढ़वाल के कई स्थानों में उनकी संताने निवास कर रही है जिन्हें पं0 हरिकृष्ण रतूड़ी ने जातियों के अन्दर समाविष्ठ कर लिया है। ये नाथ पंथी विविध जातियां सत्यनाथ पंथी, राम के जोगी, आईपंथी, निरंजनी धर्मनाथी, वैराग्यपंथी,, गिरी, वंग, भारती, गुसांई, सरस्वती आराण्य, तीर्थ आदि है। जोगी व जोगिनें बनने की व्यापक प्रथा भी नाथ मत के यहां अस्तित्व की पुष्टि करती है। आज समाज में नाथों की ये संताने डल्या या ओल्या नाम से जानी जाती है। अतिवृष्टि या अनावृष्टि से फसल को हानि पहुँचने पर गढ़वाल के निवासी डल्या की शरण लेते हैं जो भैरों नरसिंग की मनौती मान कर तूफान बन्द करने या उचित समय पर वर्षा करने का स्वांग रचते हैं। इस कार्य के लिए उनको प्रत्येक कृषक के घर से फसल पर एक अपरिमित अन्न राशि नियम पूर्वक मिलती है जिसे डड्वार कहते हैं। दक्षिण गढ़वाल में बहुत से नाथ रहते हैं इन नाथों के लिये डड्वार की व्यवस्था तथा इनके मठों के लिए गूंठ ग्रामों की व्यवस्था गढ़ नरेशों से भी पूर्व थी, बाद में अजयपाल के समय नाथों की प्रतिष्ठा तथा प्रभुत्व बढ़ गया था। गढ़वाल में वर्तमान समय में नाथों के गांव हैं[31] :- उदयपुर में अमगांव, लंगूर में अदाली, पैनौ में अन्दरगांव, डबरालस्यूं में अमाड़ी, पाटीसैण में अमोठा, सितोनस्यूं में ओजली, गगवाड़स्यूँ में उज्याड़ी, गगवाड़ा, गहड़ बदलपुर में उमेठी, चलणस्यूँ में कलगढ़, देवलगढ़, भाबर में कलालघाटी, खाटली में काण्डा तल्ला, बदलपुर में

टकसुण, श्रीनगर में जोगीवाड़ा, वींगाधार, अजमेर में ताछला, बछणस्यूं में नवासू, इडियाकोट में बाड़ाहाट, सितोनस्यूं में फुलणगांव, मनियारस्यूं में बगवाड़ी, उदयपुर में मुसागली, कालागढ़ में सुभाषनगर आदि। चमोली जिले में गोपश्वर, जोशीमठ, पीपलकोटी, केदारनाथ, नागनाथ आदिबदरी, चन्द्रापुरी, गमनीगांव, टिहरी गढ़वाल में जोग्याण (अठूर) थाती, सिंराई तथा सेम, उत्तरकाशी में धरासू, कुण्ड, भडोली, देहरादून में जोगीवाला तथा गोरखपुर क्षेत्र नाथ योगियों की स्मृति के परिचायक हैं।

वर्तमान प्रचलित आयामों के संदर्भ में गढ़वाल के धुर दक्षिण में भाबर तथा गंगासलाण में भैरोंघाटी तक-गांव-गांव में ऊचे डाडों व अन्य स्थानों में सिद्धबाबा के मंदिर मिलते हैं, जिसकी मनौती मानते हैं। वन काटने वाले सिद्ध बाबा की सिरणी करते हैं। यहां के तंत्र, झाडा-ताडा, रखवाली गीतों में आज भी नाथ प्रभाव देखने को मिलता है। मंत्रों में गुरु और राख का विशेष महत्त्व है। साधना पद्धति से गुरु की श्रेष्ठता स्वीकार की गयी है और राख को बभूति मानकर उसका महत्त्व सर्वोपरि प्रतिपादित किया। गोरखनाथ तथा अन्य जोगियों को यही वभूति प्रिय थी। इसीलिए गढ़वाल में रखवाली करने का विधान है और मंत्रित राख का टीका लगा कर रक्षा की याचना की जाती है। झाड़ा-ताड़ा, रखवाली करने वाले लोगों को आज समाज में हीन समझा जाता है। अत: सिद्ध होता है कि नाथ सिद्ध परम्परा का प्रादुर्भाव निचले समाज में ही हुआ। बद्दी, औजी, लोहार, डल्या इस परम्परा के मुख्य संवाहक रहे हैं, लेकिन वर्तमान में शैक्षिक जगत में उन्नति होने से यह सब परम्परायें लुप्त होती जा रही है।

**सन्दर्भ :-**


1- वासुदेवशरण अग्रवाल-पाणिनीकलीन भारतवर्ष पृ. 69, संस्कृति पत्रिका अंक 3,जौलाय-सितम्बर 1985, पृ. 50

2- शंकर काला-गढ़वाल हिमालय में तीर्थयात्रा एवं नया पर्यटन पृ. 31; गढ़वाल पर्यटन विशेषांक पृ. 6-57, संस्कृति पत्रिका अंक 3 जौलाय सितम्बर 1985, पृ. 5-10

3- गढ़वाल यात्रा पर्यटन विशेषांक, पृ. 5, 7 अमर उजाला, 13 फरवरी, 2005, पृ.15

4- शंकर काला-गढ़वाल हिमालय में तीर्थ यात्रा एवं पर्यटन, पृ.27

5- भगवती प्रसाद सिंह-दिग्विजय नाथ स्मृति ग्रन्थ, पृ. 281, 82

6- शांति प्रसाद चंदोला-नाथ पंथ, पृ. 4-5

7- भागीरथ प्रसाद त्रिपाठी-गोरक्षसिद्धान्त संग्रह, पृ. 11

8- पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल-गोरखबानी, पृ. 4-5-16

9- शांति प्रसाद चंदोला-नाथ पंथ, पृ. 27

10- शिव प्रसाद डबराल-उत्तराखण्ड का इतिहास भाग-3, पृ. 527

11- हजारी प्रसाद द्विवेदी-नाथ सम्प्रदाय, पृ. 23

12- राहुल-गढ़वाल, पृ. 447

13- शिव प्रसाद डबराल-उत्तराखण्ड का इतिहास, भाग -1
14- पं0 हरिकृष्ण रतूड़ी-गढ़वाल का इतिहास, पृ. 134
15- शांति प्रसाद चंदोला-नाथपंथ, पृ. 18
16- राहुल-गढ़वाल, पृ. 96
17- शिव प्रसाद डबराल-उत्तराखण्ड का इतिहास, भाग 3, पृ. 476-527
18- पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल, योग प्रवाह, पृ. 199
19- पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल, मकरन्द, पृ. 144-45
20- शांति प्रसाद चंदोला-नाथपंथ, पृ. 54
21- शांति प्रसाद चंदोला- वही, पृ. 54
22- शांति प्रसाद चंदोला-वही, पृ. 55
23- हजारी प्रसाद द्विवेदी-वही, पृ. 14
24- शांति प्रसाद चंदोला-वही, पृ. 102
25- कांति प्रसाद नौटियाल-अर्कियालॉजी आफ कुमांऊ पृ. 218
26- शांति प्रसाद चंदोला- वही, पृ. 102
27- शिवनारायण सिंह-गढ़ सुम्याल, पृ. 56
28- राहुल-गढ़वाल पृ. 96
29- मदनचंद्र भट्ट-हिमालय, का इतिहास भाग 1, पृ.18
30- विष्णुदत्त कुकरेती - नाथपंथ गढ़वाल के परिपेक्ष्य पृ. 231 से 239
31 विष्णुदत्त कुकरेती - वही, पृ. 227 से 231